विशद

मनोकामनापूर्ण शांतिनाथ विधान

माण्डला

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 16 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 32 अर्घ्य
कुल 60 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद मनोकामनापूर्ण शांतिनाथ विधान**

कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज**

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज,
क्षु. श्री विसोमसागर जी महाराज, ब्र. प्रदीप भैया जी

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षु. श्री वात्सल्य भारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660996425

संयोजन : ब्र. सपना दीदी 9829127533
ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी

संस्करण : तृतीय 2017 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : रु. 31/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : 1. **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो.: 9812502062, 9416888879

2. **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली, गांधी नगर,
नियर लाल बत्ती चौक, दिल्ली मो. 09818115971

3. **सुरेश सेठी**
पी-958 शांतिनगर रोड़ नं. 3,
दुर्गापुरा जयपुर (राज.) 9413336017

4. **श्री दि. नेमिनाथ तीर्थ**
नेमिनगर, नैनवां (बूंदी) राज. मो.: 9829333557

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री मज्जिनेन्द्र आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 7 अप्रैल से 13 अप्रैल 2017 तक में

श्रीमति शांतिदेवी धर्मपत्नी स्व. शिखार चन्द जैन के पुत्र-पुत्रवधु
श्रीमति सुशीला जैन धर्मपत्नी श्री विमलप्रसाद जैन पंसारी माता-पिता बनने के उपलक्ष्य में
श्रीमति सुमन जैन धर्मपत्नी सौरभ जैन, श्रीमति पूजा जैन धर्मपत्नी राहुल जैन
ऋषभ जैन, भव्य जैन, किषिका जैन, विभोर जैन (रेवाड़ी वालों) की ओर से

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
9811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

शांति विधान की कथा

दोहा- शांती पाते जीव सब, करके शांति विधान।
विशद भाव से हम यहाँ, करते जिन गुणगान।।

शांति विधान कब क्यों और किसने किया? इस शांति विधान को करने से क्या फल प्राप्त हुआ। इसकी कथा का प्रसंग इस प्रकार है

एक बार मथुरा नगर में सूर्यवंशी अन्यायी राजा हुआ इसके अन्याय से प्रजा भी न्याय व कर्तव्य विहीन हो गई तब ग्राम देवता ने क्रोधित होकर राजा सहित सारी प्रजा पर उपसर्ग करना प्रारम्भ कर दिया और अनेकों रोगों से पीड़ित कर दिया। फलस्वरूप प्रतिदिन लोग मरने लगे। ऐसी दशा देख राजा सहित प्रजा ने मथुरा नगरी को छोड़ दिया। सारा नगर जन शून्य हो गया। तभी संयोग से एक दिन आषाढ़ सुदी तेरस को मथुरा नगर की स्थिति से अनजान सुमति नाम का एक श्रेष्ठी आया। जन शून्य नगरी को देख विस्मित हुआ, किन्तु तेज वर्षा के कारण एक शून्य घर में ठहर गया। अचानक उपद्रव होने से दुःखी मन से वह राजा के समीप पहुँचा और जनशून्य नगरी का कारण जानकर जिनालय में जाकर भगवान की आराधना करने लगा। इतने में ही पुण्य संयोग से उसे दो चरण ऋद्धिधारी मुनियों के दर्शन हुए। श्रद्धा से उन्हें नमन कर विनय भाव से पूछा कि हे ऋषिराज! मथुरा नगरी का यह उपद्रव कैसे शांत हो सकता है? हे दया सिंधु कृपा कर बतलाइये। विनयवान श्रेष्ठी के वचन सुन मुनिराज बोले हे भव्य! श्रद्धा भाव से शांति विधाता श्री शांतिनाथ भगवान का पूजा विधान करो। इससे सर्व उपद्रव शांत होगा। इतना कहकर दोनों चारण ऋद्धिधारी मुनी वहाँ से विहार कर गए और इधर सुमति नाम के श्रेष्ठी ने भाव सहित शांति विधान किया फलस्वरूप मथुरा नगरी में नगर देवता कृत उपसर्ग पूर्ण शांत हो गया,

नगरवासियों ने अपने-अपने गृह में प्रवेश किया, फिर जिनालय में जाकर शांतिनाथ भगवान के प्रति विशेष भक्ति भाव से पूजा विधान किया और परस्पर प्रेमभाव से रहने लगे।

वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता **प.पू. आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** ने अपने उपयोग को प्रभु भक्ति में रमाते हुए अपने अन्तश के भावों को मधुर शब्दों में संजोकर आगमानुकूल इस मनोकामनापूर्ण शान्ति विधान की रचना की है।

यथा नाम तथा फल प्रदायक यह पूजा विधान जैन समाज में हमेशा से प्रचलित है अपनी पारिवारिक समृद्धि के लिए एवं गृह क्लेश दूर करने के भाव से लोग समय-समय पर शांति विधान का अयोजन करते रहते हैं तथा अपने स्वजन परिजन के मरण पर या उनकी पुण्यतिथि पर स्वयं एवं दिवंगत आत्मा की शांति की कामना से यह विधान कराया जाता है जो विशद भावना का परिचायक है।

इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग आदि असादा कर्मोदय के निमित्त से जीवन में आने वाले दुखों से शांति पाने के लिए यह शांति विधान बहुत ही कार्यकारी है।

इस विधान का श्रेष्ठ समय जब सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष हो, तब शुक्ल पक्ष की एकम् से लगाकर पूर्णिमा तक भावों से यह विधान विधिपूर्वक करें। यह विधान सर्व विघ्न का नाश करने वाला, आत्म शांति का दाता और भव्य जीवों को मुक्ति प्रदाता हैं। यदि आपको यह विधान अकेले करना है तो आप कभी भी माण्डले की रचना किये बिना अष्ट द्रव्य से थाली में भी यह विधान सम्पन्न कर सकते है।

पुनः गुरुवर के श्री चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक बारम्बार नमोस्तु-3

संकलन मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

मंगलाष्टक (भाषा)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी॥
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥1॥

नमित सुरासर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान॥
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥2॥

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी॥
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥3॥

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबीस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव॥
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥4॥

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव॥
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी॥5॥

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार॥
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥6॥

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी॥
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥7॥

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥8॥

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में॥
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥9॥

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा॥
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी॥10॥

॥इति मंगलाष्टक॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत॥

हस्त शुद्धि

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्तप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

जल शुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्त सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

सर्वांग शुद्धि

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोदभवे अमृत वर्षिण अमृतं स्रावय-2 सं सं क्लीं-क्लीं ब्लूं-ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

पात्र शुद्धि

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नाय, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं करोमि स्वाहा।

दिग्बंधन

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं आग्नेय दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं नैर्ऋत दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्ः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्ः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

(अब ऊर्ध्वलोक, अधोलोक, मध्यलोक में पीली सरसो क्षेपण करें।)

लघु जलाभिषेक पाठ

तर्ज- आलोचना पाठ (चाल छन्द)

परिणाम की शुद्धी हेतू, जिनबिम्ब परम है सेतू।
जिन के दर्शन को पाते, निज के दर्शन हो जाते॥
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे।
हम जिनाभिषेक को आए, जिनपद में शीश झुकाए॥1॥

(श्वोसोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें)

अभिषेक प्रतिज्ञा

जिन प्रतिमा के न्हवन का, करते हम संकल्प।
भाव सुमन अर्पण करें, छोड़ के अन्तर्जल्प॥2॥

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तिलक

चंदन खुशबूदार ले, तिलक करें नव अंग।
करें इन्द्र की कल्पना, धारें विशद उमंग॥3॥

ॐ ह्रीं नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

श्रीकार लेखन

उभय लक्ष्मी प्राप्तजिन, तीर्थंकर भगवान।
पीठोपरि श्रीकार हम, लिखते महति महान॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि।

"सिंहासन स्थापना"

पाण्डु शिला की कल्पना, करते यहाँ विशेष।
न्हवन हेतु जिस पर यहाँ, तिष्ठो श्री जिनेश॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पीठथापनं (सिंहासन) स्थापनं करोमि।

"जिनबिम्ब स्थापना"

भक्तिभाव के रत्न जड़ित, पावन सिंहासन।
हृदय कमल मेरा हे प्रभु, भावों का आसन॥
आहवानन है यहाँ आपका, सिंहासन पर।
नाथ! पधारो आप विशद, श्रद्धा आसन पर॥6॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाय भगवन्निह पाण्डुक-शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

"चार कलश स्थापना"

प्रासुक निर्मल नीर से, कलश भराए चार।
स्थापित चउ कोंण में, करते मंगलकार॥7॥

ॐ ह्रीं चतुःकोणेषु स्वस्तये चतुः कलशस्थापनं करोमि।

"अर्घ्य चढ़ावें"

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
करने को अभिषेक हम, अर्घ्य चढ़ाते नाथ!॥8॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थित जिनायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

"जल से अभिषेक"

जिन की मुद्रा जिन बिम्बों में, विशद झलकती अपरम्पार।
भावों से जिनवर का दर्शन, करते हैं हम बारम्बार॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥9॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिमहावीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर-परम-देवं-आद्यानां आद्ये मध्यलोके, जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नाम्निनगरे.... तिथो....वासरे मुन्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचयामः॥

"चार कलश से अभिषेक"

करते न्हवन चार कलशों से, कर्म घातिया मम क्षय हों।
अनन्त चतुष्टय पा जाऐं हे नाथ! आपकी जय जय हो॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं

तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन चतु: कलशेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

"बृहद जिनाभिषेक"

परमौदारिक परम सुगन्धित, प्रभु तन से शुभ अतिशय हो।
न्हवन सुगन्धित जल से करते, नाथ! आपकी जय-जय हो॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं स: झं वं ह्र: य: स: क्षां क्षीं क्षं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्ष: क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रं ह्र: ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ: ठ: इति सुगन्धित जलेन वृहच्छांति-मन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके 'विशद' पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शुद्ध वस्त्र से बिम्ब का, करते हम प्रक्षाल।
यही भावना है विशद, कटे कर्म जंजाल॥12॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

आसन पर जिनराज को, करें विशद आसीन।
विनयभाव आदर सहित, सब मिल ज्ञान प्रवीण॥13॥

ॐ ह्रीं अभिषेकोपरान्ते सिंहासने जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

नीर गंध आदिक सभी, द्रव्यों का ले अर्घ्यं।
जिन चरणों अर्पित करें, पाने सुपद अनर्घ्य॥14॥

ॐ ह्रीं पीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पूज रहे तव पाद हम, तारण-तरण जहाज।
भव-भव भ्रमण विनाशकर, पाएँ सिद्ध समाज॥15॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

भजन अभिषेक समय का भजन

(तर्ज-खिलौना जानकर)

कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।
बनें हम मोक्ष के राही, न्वहन प्रभु का कराते हैं।टेक॥
कभी अरहंत के कोई, चरण भी छू नहीं पाते।
बिम्ब पाषाण धातू के, प्रतिष्ठित भक्त करवाते॥
पुण्य की वृद्धि करने को, न्वहन उनका कराते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं॥1॥
जिनालय तीन लोकों में, अकृत्रिम श्रेष्ठ शुभकारी।
रहे जिनबिम्ब उनमें शुभ, श्रेष्ठ शाश्वत हैं अविकारी॥
वहाँ नर देव विद्याधर, न्वहन कर सिर झुकाते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं॥2॥
प्रथम कर्त्तव्य श्रावक का, रहा अभिषेक फिर पूजन।
करे जो भाव से अर्चा, पुण्य का वह करे अर्जन॥
भक्ति से इन्द्र सौ प्रभु का, न्वहन अतिशय कराते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं॥3॥
प्रभू यह भक्त अर्चा को, यहाँ पर आज आये हैं।
'विशद' अभिषेक कर प्रभु का, हर्ष मन में जगाते हैं॥
बनें हम मोक्ष के राही, भावना आज भाते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं॥4॥

भजन अभिषेक समय का

(तर्ज करले जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी।।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥1॥
प्रासुक करके जल भर करके, सिर के ऊपर ढारे।

करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे॥
सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥2॥
पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए।
चार कलश चारों कोंणों पर, जल भरकर रखवाए॥
खुशियाँ छाई चारों ओर, हमारी नगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥3॥
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी॥
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥टेक॥

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज जिनवर जगती के ईश....)

हे तीन लोक के नाथ! झुकाते माथ। भक्त हे स्वामी!
अभिषेक करे शिवगामी॥टेक॥
अकृत्रिम सोहें जिन मंदिर, जिन प्रतिमाएँ जिनमें सुंदर।
भक्ती करके रात इन्द्र करें प्रणमामी, अभिषेक करें शिवगामी॥1॥
जल क्षीर सिंधु से लाते हैं, जिनवर का न्वहन कराते हैं।
भक्ती कर बनते भक्त, श्रेष्ठ पथगामी, अभिषेक करें शिवगामी॥2॥
सुर इन्द्रों का सहयोग करें, इन्द्राणी मंगल पात्र भरें।
सुर चँवर ढौरते, जिनके आगे नामी, अभिषेक करे शिवगामी॥3॥
जो न्हवन प्रभु का करते हैं, वे कर्म कलिमा हरते हैं।
वे सद्श्रावक भी बनें 'विशद' शिवगामी, अभिषेक करें शिवगामी॥4॥
जो जिनवर का अभिषेक करें, वे अपने संकट दूर करें।
सद् संयम धर बन जाते अर्न्तयामी, अभिषेक करें शिवगामी॥5॥
जो पावन दीप जलाते हैं, शुभ भाव से आरति गाते हैं।
वे कर्म नाशकर होवें विशद अकामी, अभिषेक करें शिवगामी॥6॥

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गवि-नाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय, सर्वक्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (....) **सर्वज्ञानावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदर्शनावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववेदनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायु:कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनामकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रोधं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमायां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वलोभं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वरागं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वअश्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगौभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि

सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि, **सर्वभूतपिशाचव्यंतर- डाकिनीशाकिन्यादि भयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वव्यापारहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वराजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचौरभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशोकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववैरं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमनोव्याधि** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायशः** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वपापं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्व अविद्यां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वकुमतिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुःखं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखरशिखामणित्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनता-अभयदानदायकसार्वभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहति-महावीरसन्मतिवीरातिवीर-वर्धमाननामालंकृत श्रीमहावीर जिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु, सुखिनो भवंतु, सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे........ प्रदेशे........ नामनगरे वीरसंवत्........ तमे........ मासे........ पक्षे........ तिथौ........ वासरे नित्य पूजावसरे (........ विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे

सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्थ मम च... (....... शांतिधारा पुण्यार्जक परिवार का नाम बोले) शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! **सुभिक्षं** कुरू कुरू **मनः समाधिं** कुरू कुरू **धर्म शुक्लध्यानं** कुरू कुरू **सुयशः** कुरू कुरू **सौभाग्यं** कुरू कुरू **अभिमतं** कुरू कुरू **पुण्यं** कुरू कुरू **विद्यां** कुरू कुरू **आरोग्यं** कुरू कुरू **श्रेयः** कुरू कुरू **सौहार्दं** कुरू कुरू **सर्वारिष्ट ग्रहादीन्** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय **आयु** द्रांघय द्राघय। **सौख्यं** साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांति कुरू कुरू ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थ मम च..... सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।
संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांती धारा देते हैं।।
अर्घ- जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय।
'विशद'भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री विशद सागर जी का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मानो जिन गिर से गिरी, जल धारा हे नाथ!
गंधोदक उत्तमांग उर, 'विशद' लगाएँ माथ।।
मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि

लघु विनय पाठ-1

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भवि जन को भव-सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।
।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।
।। पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ!।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीं द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ मैं भी गुणगान॥1॥
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥
ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश॥
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥
इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे माहान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥
॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

विनय पाठ - 2

दोहा

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्॥
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान॥
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज॥
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश॥
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश॥
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार॥
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश॥
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार॥
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू! करते स्वयं समान॥
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव॥
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल॥
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम॥

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान॥1॥
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध॥2॥
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय॥3॥
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म॥4॥
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव॥5॥
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार॥6॥
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान॥7॥

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां...।।पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं इसके अलावा परिग्रह एवं मंदिर से बाहर जाने का पूजन पर्यन्त त्याग)

इत्याशीर्वाद

पूजा पीठिका - (संस्कृत)

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केविल पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपवित्र पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥2॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथम मंगलम् मतः॥3॥
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥5॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्र नमाम्यहं॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे कल्याण नाथ महंयजे॥

ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाम महंयजे॥

ॐ ह्रीं भगवत् जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिन सूत्र महंयजे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणितत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुंगवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृंग मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्‌भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्‌गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिंगतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।
ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

नित्याप्रकम्पाद्‌भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।
(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलिं करें)
कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।
जंघावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः, कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।6।।
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्‌जल्लमल्लौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवान महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।
(इति परम-ऋर्षिस्वस्ति मंगल विधानम्)

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, श्री देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥ शान्तये शांतिधारा...

दोहा- **पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोइ पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।

एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी॥4॥
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन॥
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश॥5॥
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है॥
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं॥6॥
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है॥
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा॥7॥
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान॥
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान॥8॥
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप॥
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान॥9॥

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पाञ्जलिं करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥

पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते॥
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते॥

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)॥

श्री नवदेवता की आरती

तर्ज–इह विधि मंगल आरति कीजे---

नव देवो की आरति कीजे, नर भव स्वयं सफल कर लीजे।
पहली आरती अर्हत् थारी, कर्म घातिया नाशनकारी॥
नव देवों...
दूसरी आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता॥
नव देवों...
तीसरी आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की॥
नव देवों...
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की॥
नव देवों...
पाँचवी आरती मुनि संघ की, बाह्य अभ्यंतर रहित संग की॥
नव देवों...
छठवी आरती जैन धर्म की, 'विशद' अहिंसा मई परम की॥
नव देवों...
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की॥
नव देवों...
आठवी आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों को मंगलकारी॥
नव देवों...
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की॥
नव देवों...
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशिष लीजे॥
नव देवों...

श्री पद्मप्रभ जिन पूजन

स्थापना

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ॥
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।
हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ॥
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(वीर छन्द)

निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय ।
जन्म जरा मृतु दुख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ॥
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ॥1॥

ॐ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय ।
भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ॥
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ॥2॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय ।
अक्षय पद को पाने हेतू, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ॥
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ॥3॥

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुन्दर सुरभित और मनोहर, भाँति-भाँति के पुष्प मँगाय ।
कामबाण विध्वंस करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय॥
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ॥4॥

ॐ रां रीं रूं रौ रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वशंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय ।
क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ॥
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ॥5॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय ।
मोह तिमिर के नाशन हेतू, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ॥
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ॥6॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दश प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय ।
अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।7।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐला केला और सुपाड़ी, आम अनार श्री फल लाय ।
पाने हेतू मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।8।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले दीप जलाय ।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।
हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।9।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ हूँ उ ह्रौं सा ह्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस ।**
कल्मष होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास ।।
तीन योग से प्रभू पद, वन्दन करूँ त्रिकाल ।
पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल ।।

(छन्द – तामरस)

जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़– जोड़ द्वय हाथ नमस्ते ।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते ।।

भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर–नर कृत पद सेव नमस्ते ।
पद्म प्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते ।।
आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते ।
पद झुकते शत इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते ।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते ।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय–जय गुण गम्भीर नमस्ते ।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन–जन के आधार नमस्ते ।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते ।।
जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते ।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, काम जयी महावीर नमस्ते ।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते ।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते ।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते ।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते ।।

(छंद घत्ता)

जय जय हितकारी, करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभु ।
जय नित्य निरंजन, भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभु ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ ।**
रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ ! ।।

।।इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

देहरा-तिहारा श्री चन्द्रप्रभु पूजा

स्थापना

यश तीनों लोकों में जिनका, खुश होके गाया जाता है।
प्रमुदित होके हर भक्त विशद, जिनके पद माथ चुकाता है।।
जिन चरणों में जगती सारी, अपनी जो आस लगाती है।
श्री चन्द्र प्रभु देहरे वाले, के द्वार पूर्ण हो जाती हैं।।
दोहा- भक्त खड़े हैं द्वार पर, कृपा करो भगवान।
भर दो झोली हे प्रभु, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज माता तू दया करके...

हम पर में भटकाए, निज को ना जाना है।
त्रय रोग नशाने को, यह नीर चढ़ाना है।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन की शीतलता, बहु सौख्य दिलाती है।
तव वाणी हे जिनवर, भव ताप नशाती है।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर जग सारा, हम नहीं जान पाये।
अब अक्षय पद पाने, हे नाथ! शरण आये।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम बाण नाशी, यह पुष्प चढ़ाते हैं।
शरणागत बनकर के, जिन शीश झुकाते हैं।।

देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा का क्षय करके, प्रभु समरस पा जाएँ।
चउ संज्ञा क्षय करके, आतम का रस पाएँ।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान नशे मेरा, निज आतम दीप जले।
जो मोह तिमिर छाया, अब मेरा पूर्ण गले।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति से, हम हारे हैं स्वामी।
वह नाशो अब मेरे, हे जिन! अन्तर्यामी।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल से राग किया, हमने बहु दुख पाये।
फल चढ़ा रहे स्वामी, शिव फल पाने आये।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
तुम हो प्रभु अविकारी, हम महिमा गाते है।।
देहरे वाले बाबा, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी।
झोली मेरी भर दो, हे जिन! अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं देहरा-तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा हम यहाँ, देते चरण समीप।
हे जिनेन्द्र मेरे हृदय, जले ज्ञान का दीप॥
।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाये हम भगवान।
जब तक मुक्ती ना मिले, करे आपका ध्यान॥
।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्या गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ॥2॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना निज का स्वरूप पहचाना॥3॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सातै जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए॥4॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तयां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुनि सातें पाई, मुक्ती वधु जो पखाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तयां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भक्ती को तुम हे प्रभो! करते मालामाल।
देहरे वाले चन्द्र की, गाते हम जयमाल॥

(वेसरी छन्द)

चन्द्र प्रभु तुम जग हितकारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।
देवों के तुम देव कहाते, जग के प्राणी तुमको ध्याते॥
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, तुमने तीर्थंकर पद पाया।
वैजयन्त से चयकर आए, पञ्चकल्याणक देव मनाए॥
महासेन के राज दुलारे, मात सुलक्षणा के हो प्यारे।
चन्द्रपुरी में जन्म उपाए, गिरि सम्मेद से मोक्ष सिधाए॥
अलवर जिला में नगर तिजारा, देहरे का है अजब नजारा।
जब भी मुनिवर नगर में आते, टीले में प्रतिमा बतलाते॥
जहाँ पे टीला था शुभकारी, जंगल फैला था भयकारी।
भारत में आई आजादी, बढ़ने लगी यहाँ आबादी॥
शासन के आदेश से भाई, चौड़ी सड़क वहाँ करवाई।
उस टीले की हुई खुदाई, उसमें प्रतिमा दई दिखाई॥
त्रय खण्डित प्रतिमाए पाए, मन में श्रावक आस लगाए।
कई दिनों तक चली खुदाई, किन्तु जिन प्रतिमा ना पाई॥
वैद्य विहारी यहाँ के गाए, पत्नी सरस्वती कहलाए।
स्वप्न रात में उसको आया, उसने प्रभु का दर्शन पाया॥
दीपक ले देहरे पे आई, उसने रेखा वहाँ बनाई।
प्रातः लोग वहाँ पर आए, धीरे-धीरे भूमि खुदाए॥
चन्द्रप्रभु की प्रतिमा पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
खुश हो जय-जयकार लगाए, यात्री उनके दर्शन पाए॥
श्रावण सुदि दशमी शुभकारी, तिथि हो गई पावन मनहारी।
अतिशय हुए जहाँ पे भारी, वाञ्छित फल पाए नर नारी॥
पुत्र हीन सुन्दर सुत पाए, निर्धन मन वाञ्छित फल पाए।
बुद्धि हीन सद्बुद्धि जगाए, रोगों से कई मुक्ती पाए॥
भूत प्रेत की हों बाधाएँ, प्राणी उनसे मुक्ती पाएँ।
दीप जलाकर आरति गाते, प्रभु के ऊपर छत्र चढ़ाते॥

चालीसा जो मन से ध्याते, उनके कार्य सिद्ध हो जाते।
प्रभु के दर जो प्राणी आते, अपने वे सौभाग्य जगाते॥
दोहा- विशद भाव से हे प्रभो! करते हम गुणगान।
पूरी हो मम् कामना, चन्द्र प्रभु भगवान॥

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चरण कमल में आपके, झुका रहे हम शीश।
ऋद्धि सिद्धि सम्पति बढ़े, हे त्रिभुवन पति ईश॥

॥इत्याशीर्वाद॥

शान्ति स्तवन

नाना विचित्रं भव दुःख राशि। नाना प्रकारं मोहं च पाशि।।
पापानि दोषानि हरंति देवाः। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।1।।
संसार मध्ये मिथ्यात्व चिंता। मिथ्यात्व मध्ये कर्माणि बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवाः। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।2।।
कामस्य क्रोधं माया विलोभं। चतुः कषाया इव जीव बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवाः। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।3।।
जातस्य मरणं द्यूतस्य वचनं। द्वौ शांति जीव बहु जन्म दुःख।।
ते दुःख छेदंति देवाधिदेवाः। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।4।।
चारित्र हीनं नर जन्म मध्ये। सम्यक्त्व रत्नं परिपालयन्ति।
ते जीव सिद्धंति देवाधिदेवाः। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।5।।
मृदु वाक्य हीनं कठिनस्य चिंता। पर जीव निंदा मनसा च बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधि देवाः। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।6।।
पर द्रव्य चोरी पर दार सेवा। हिंसादि कांक्षा अनृत च बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेवाः। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।7।।
पुत्राणि मित्राणि कलत्राणि बंधुरू। बहु जन्म मध्ये इहजीव बंधं।।
ते बंध छेदति देवाधिदेवाः। इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ!।।8।।

(मालिनी छन्द)

जपति पठति नित्यं शांति नाथाद् विशुद्ध। स्तवन मधु गिरायां पाप संतापहारं।।
शिव सुख निधि पोतं सर्व सत्त्वानुकंपं। सुकृत गुण भद्रं भद्र कार्येषु नित्यं।।9।।

।।इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शान्तिनाथ जिन पूजा

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, खुश होके गाई जाती है।
चरणों में माथ झुकाकर के, यह जगती भी हर्षाती है।।
जिनके दर्शन से पाप कई, जन्मों के भी कट जाते हैं।
अर्चा करते जो भाव सहित, वे शांति स्वयं ही पाते हैं।।
दोहा- शांति सरोवर आप हो, शांतिनाथ भगवान।
शांती दो हमको विशद, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकल विघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! मनोकामनापूर्ण! पंचम चक्रेश्वर द्वादश कामदेव! अष्टप्रातिहार्य संयुक्त! षोडशं तीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! ॐ ह्रीं ..... अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याव्हानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं ..... अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केसर की गंध चढ़ाएँ, संसार ताप विनशाएँ।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।2।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय भवताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी हम पाएँ।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।3।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।4।।

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य सरस बनवाएँ, अर्पित कर क्षुधा नशाएँ।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।5।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम ज्ञान दीप प्रजलाएँ, अब मोह कर्म विनशाएँ।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।6।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।7।।

ॐ स्रां स्रीं स्रूं स्रौं स्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चरणों नाथ चढ़ाएँ, शाश्वत पद मुक्ती पाएँ।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चरणों प्रभु अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।9।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रू उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शांतिनाथाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(पाइता छन्द)

पद शांति धार कराएँ, अतिशय शांती प्रगटाएँ।
दो शांति हमे हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

पुष्पों के थाल भराए, पुष्पाञ्जलि करने आए।
दो शांति हमें हे स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।।

(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठकृष्ण चौदश को स्वामी, जन्मे शान्तिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठकृष्ण की चौदश भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिव राह दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष मंगलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शांति प्रदायक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल।।

(छन्द-तामरस)

चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते।।
सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशदज्ञान के हार नमस्ते।
सम्यक् चारितवान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।।
गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्मकल्याण नमस्ते।।
तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।
मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते।।
जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।
देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते।।
अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।
करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते।।
एकानेक स्वरूप नमस्ते, चिन्तामणि चिद्रूप नमस्ते।
नाना भाषा वान नमस्ते, गुण के आप निधान नमस्ते।।
आशापास विहीन नमस्ते, आत्म स्वरूप सु लीन नमस्ते।
कुल कृम कारि जिनेन्द्र नमस्ते, धीर वीर भुवनेन्द्र नमस्ते।।
भक्त पूजते आन नमस्ते, करते हैं गुणगान नमस्ते।
विशद सिन्धु आचार्य नमस्ते, पूजा का शुभ कार्य नमस्ते।।
करवाएँ शुभकार नमस्ते, किए बड़ा उपकार नमस्ते।
प्राप्त होय सद् ज्ञान नमस्ते, पा जाएँ निर्वाण नमस्ते।।

दोहा- शांती के हैं कोष जिन, शांती के आधार।
'विशद' शांति पाए स्वयं, करो प्रभू उद्धार।।

ॐ श्री शांतिनाथाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांति पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।
सुनो प्रार्थना हे प्रभो!, बोलें जय जय कार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

दोहा- अनन्त चतुष्टय आपने, पाए हे भगवान!।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, पाने शिव सोपान।।

(प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, खुश होके गाई जाती है।
चरणों में माथ झुकाकर के, यह जगती भी हर्षाती है।।
जिनके दर्शन से पाप कई, जन्मों के भी कट जाते हैं।
अर्चा करते जो भाव सहित, वे शांति स्वयं ही पाते हैं।।

दोहा- शांति सरोवर आप हो, शांतिनाथ भगवान।
शांती दो हमको विशद, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकल विघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! मनोकामनापूर्ण! पंचम चक्रेश्वर द्वादश कामदेव! अष्टप्रातिहार्य संयुक्त! षोडशं तीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याव्हानम्।
ॐ ह्रीं.....अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं .....अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, सद् दर्शन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिन, पाए प्रभुताई।। जिनेश्वर...।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनंता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, विशद ज्ञान पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिन, पाए प्रभुताई जिनेश्वर.....।।2।।

ॐ ही अनन्त दर्शन गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जिन, पाए प्रभुताई जिनेश्वर.....।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों ने शक्ति, आतम की खोई।
ते सब घात किए जिन स्वामी, बल असीम पाई।।
जिनेश्वर पूजो हो भाई।
तीर्थंकार श्री शांतिनाथ जिन, पाए प्रभुताई जिनेश्वर.....।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाशे प्रभु ने, ध्यान किए भाई।
अनन्त चतुष्टय प्रगटाए शुभ, पाई प्रभुताई।।
जिनेश्वर पूजो हो भाई।
शांतिनाथ की महिमा पावन, इस जग ने गाई-जिनेश्वर.....।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त शक्ति गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

प्रातिहार्य प्रगटाए हैं, पाके केवलज्ञान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, धर चरणों में ध्यान।।

(द्वितीय वलयो परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, खुश होके गाई जाती है।
चरणों में माथ झुकाकर के, यह जगती भी हर्षाती है।।
जिनके दर्शन से पाप कई, जन्मों के भी कट जाते हैं।
अर्चा करते जो भाव सहित, वे शांति स्वयं ही पाते हैं।।

दोहा- शांति सरोवर आप हो, शांतिनाथ भगवान।
शांती दो हमको विशद, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकल विघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! मनोकामनापूर्ण! पंचम चक्रेश्वर द्वादश कामदेव! अष्टप्रातिहार्य संयुक्त! षोडशं तीर्थंकर!

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याव्हानम्। ॐ ह्रीं. ....अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं.....अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(चौपाई)

पिण्डाक्षर स्व वर्ग उपाए, अग्नि बिन्दु संयुक्त कहाए।
हं बीजाक्षर युत मनहारी, सुरतरु प्रातिहार्य शुभकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय अशोक तरु युक्त शोभनपद प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु संयुक्त बताया, पिण्डाक्षर स्व वर्ग उपाया।
भं बीजाक्षर युत कहलाए, पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य जो पाए।।2।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभनपद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिण्डाक्षर स्व वर्गोवाला, अग्नि बिन्दु संयुक्त निराला।
मं बीजाक्षर युत शुभकारी, दिव्य ध्वनि हैं मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्य ध्वनि शोभनपद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु से संयुत जानो, पिण्डाक्षर वर्गो युत मानो।
रं बीजाक्षर युत कहलाए, प्रातिहार्य शुभ चँवर कहाए।।4।।

ॐ ह्रीं चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरढोरण शोभनपद प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु युत वर्ग बताया, पिण्डाक्षर पावन कहलाया।
घं बीजाक्षर अतिशयकारी, सिंहासन है विस्मयकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिण्डाक्षर है जग में आला, अग्नि बिन्दु से युक्त निराला।
झं बीजाक्षर संयुत जानो, प्रातिहार्य भामण्डल मानो।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य मंडिताय भामण्डल शोभनपद प्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु युत वर्ग कहाए, पिण्डाक्षर युत मंगल गाए।
सं बीजाक्षर महिमा कारी, दुन्दुभि प्रातिहार्य मनहारी।।7।।

ॐ ह्रीं दुंदुभि तरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुंदुभिनाद शोभनपद प्रदाय सूम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिण्डाक्षर स्ववर्ग सजाए, अग्नि बिन्दु संयुक्त कहाए।।
खं बीजाक्षर युत शुभ गाया, प्रातिहार्य छत्र त्रय गाया।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय छत्रत्रय शोभनपद प्रदाय खूम्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह भ म र घ झ जानो, स ख बीज वर्ण पहिचानो।
ये हैं सब विघ्नों के नाशी, जीवों को सद्ज्ञान प्रकाशी।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य सहिताय अष्ट बीज मण्डिताय सर्वविघ्न शांतिकराय श्री शांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- शांतिनाथ जिनदेव जी, नाशे सर्व कषाय।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, जिन पद में हर्षाय।।

(अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, खुश होके गाई जाती है।
चरणों में माथ झुकाकर के, यह जगती भी हर्षाती है।।
जिनके दर्शन से पाप कई, जन्मों के भी कट जाते हैं।
अर्चा करते जो भाव सहित, वे शांति स्वयं ही पाते हैं।।

दोहा- शांति सरोवर आप हो, शांतिनाथ भगवान।
शांती दो हमको विशद, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकल विघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! मनोकामनापूर्ण! पंचम चक्रेश्वर द्वादश कामदेव! अष्टप्रातिहार्य संयुक्त! षोडशं तीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याव्हानम्। ॐ ह्रीं .....अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं.....अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कषाय विनाशक जिन के अर्घ्य

(चौबोला छन्द)

क्रोध अनन्तानुबन्धी का, कर देते जो जीव विनाश।
सम्यक् दर्शन का निज में वे, प्राणी करते स्वयं प्रकाश।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अनन्तानुबन्धी का, कर देते जो प्राणी हान।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाके, होते जग में सर्व महान।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया अनन्तानुबन्धी का, करने वाले हैं जो हास।
उनका देव शास्त्र गुरु के प्रति, होता है पूरा विश्वास।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायकश्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अनन्तानुबन्धी से, हो जाते जो पूर्ण विहीन।
सम्यक् दृष्टी प्राणी होते, भेद ज्ञान धारी स्वाधीन।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।4।।

ॐ ही अनन्तानुबंधी लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध अप्रत्याख्यानोदय में, देश व्रतों का हो ना भाव।
देश व्रती होता है जिसके, इस कषाय का होय अभाव।

विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अप्रत्याख्यानोदय में, सम्भव होता है श्रद्धान।
देश व्रती बन सके जीव ना, ऐसा कहते हैं भगवान।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।6।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया अप्रत्याख्यानोदय में, जीव देश व्रत ना पावें।
सम्यक् दर्शन पाने वाले, भेद ज्ञान जो प्रगटावें।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।7।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अप्रत्याख्यानोदय में, देश व्रती ना होवे जीव।
सम्यक दृष्टी मोक्ष मार्ग की, कर लेता है पक्की नीव
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।8।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान क्रोध होने पर, महाव्रतों के हो ना भाव।
सम्यक् दृष्टी देश व्रतों को, पाने का रखते हैं चाव।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।9।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान मान के रहते, महाव्रतों को न पावें।
देशव्रती हो करे साधना, स्वर्ग सुखों में अटकावें।।

विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।10।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया प्रत्याख्यानोदय में, सकल सुव्रत न हों सम्प्राप्त।
सकल व्रतों को प्राप्त किए बिन, बन ना पाऐं प्राणी आप्त।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।11।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान लोभ के कारण, महाव्रती ना होवे जीव।
स्वर्ग सुखों को देने वाला, पुण्य प्राप्त नर करे अतीव।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।12।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध संज्वलन रहे उदय तो, यथाख्यात न हो चारित्र।
मोक्ष मार्ग का राही बनता, संयम जो नर धरे पवित्र।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।13।।

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान संज्वलन होय उदय तो, संयम जागे ना यथाख्यात।
जिसके होने पर ही होता, कर्म घातिया का भी घात।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।14।।

ॐ ह्रीं संज्वलन मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय संज्वलन मायोदय तो, संयम करते प्राणी प्राप्त।
पूर्ण कषाय नाशकर बनते, केवल ज्ञानी होकर आप्त।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।15।।

ॐ ह्रीं संज्वलन माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ संज्वलन के रहते ना, यथाख्यात होता चरित्र।
रहे मलिनता परिणामों में, केवल ज्ञान ना होय पवित्र।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।16।।

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण स्थान दशवें तक भाई, सूक्ष्म लोभ का रहे उदय।
यथाख्यात चारित्र प्राप्त हो, होय कषायों का जब क्षय।।
विशद शांति पाते जीवन में, रखते जो सम्यक् श्रद्धान।
रत्नत्रय के धारी होकर, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।17।।

ॐ ह्रीं चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय परम शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- शांती दायक आप हैं, करते विघ्न विनाश।
विशद शांति पाने चरण, लगा रखी हम आस।।

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, खुश होके गाई जाती है।
चरणों में माथ झुकाकर के, यह जगती भी हर्षाती है।।
जिनके दर्शन से पाप कई, जन्मों के भी कट जाते हैं।
अर्चा करते जो भाव सहित, वे शांति स्वयं ही पाते हैं।।
दोहा- शांति सरोवर आप हो, शांतिनाथ भगवान।
शांती दो हमको विशद, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकल विघ्न शान्तिकर! मंगलप्रद! मनोकामनापूर्ण! पंचम चक्रेश्वर द्वादश कामदेव! अष्टप्रातिहार्य संयुक्त! षोडशं तीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याव्हानम्। ॐ ह्रीं .....अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं.....अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

संकट निवारक अर्घ्य

(चाल छन्द)

हम और पे जोर चलाते, अन्दर में क्रोध जगाते।
वह क्रोध नाश हो जाए, हम पूजा करने आए।।1।।

ॐ ह्रीं परस्पर क्रोध बैर विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से सम्मान न पाते, तब मानी हम हो जाते।।
अब अपना मान गलाएँ, तव चरणों विनय जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं मानसिक रोग मान विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों की चपलाई, जिससे हो माया भाई।
अब माया पूर्ण नसाएँ, शुभ सरल भाव प्रगटाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं कलंक-माया विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मन में सन्तोष ना आवे, मन में बहु लोभ सतावे।
तृष्णा जग में दुखदायी, निर्लोभ की सुधि मन आई।।4।।

ॐ ह्रीं शांति हारक लोभ विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू कायिक जीव बताए, हमने वे बहुत सताए।
अब उत्तम संयम पाएँ, जीवों के प्राण बचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं पृथ्वी सम्बन्धी दुःख विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल कायिक जीव कहाते, हम उनको सतत सताते।
रक्षा का भाव जगाएँ, उनमें करुणा उपजाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं जल सम्बन्धी समस्याविनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अग्नी कायिक प्राणी, हम घातें हो अज्ञानी।
अब उन पे दया विचारें, ना अग्नी व्यर्थ में जारें।।7।।

ॐ ह्रीं अग्नि सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जो वायू कायिक गाये, वे हमसे दुख बहु पाए।
अब वे भी जीव बचाएँ, उन पर करुणा उपजाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं वायु सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तरु कायिक जीव कहाए, अज्ञानी हो बहु खाये।
अब उनके कष्ट मिटाएँ, संयम जीवन में पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं वनस्पति सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में त्रस जीव विचरते, मेरे प्रमाद से मरते।
हम उन पर दया विचारे, पावन समीतियाँ धारें।।10।।

ॐ ह्रीं प्राणी मात्र सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श आठ बतलाए, जिनके वश हम दुख पाए।
अब इन्द्रिय पर जय पाएँ, जिन चरणों ध्यान लगाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन-दोष विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना वस हो के भाई, की हमने बहुत लड़ाई।
अब रसना पर जय पाएँ, भक्ती में ध्यान लगाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं रसना-दोष विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कई घ्राणेन्द्रिय वश प्राणी, दुख पाते हो अज्ञानी।
अब घ्राणेन्द्रिय जय पाएॅ, मन में समता उपजाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं नासिका-दोष विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रंगों में सदा लुभाएँ, जो राग द्वेष करवाएँ।
हो चक्षू के जयकारी, प्रभु पूजा करे तुम्हारी।।14।।

ॐ ह्रीं दृष्टि दोष विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको संगीत लुभाए, उसमें सन्तुष्टी आए।
अब कर्णेन्द्रिय जय पाएँ, हे नाथ! आपको ध्यायें।।15।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय-दोष विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन भारी कुटिल कहाए, इन्द्रियों पर हुकुम चलाए।
मन को हम जीतें स्वामी, हो जाएँ नाथ! अकामी।।16।।

ॐ ह्रीं मन विकार ह्रदय रोग विनाशन समर्थ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

रोग ज्वरादि जिन्हें सताए, औषधि भी कोई काम ना आए।
रोग नाश होते दुखदायी, पूजा करने से वह भाई।।17।।

ॐ ह्रीं ज्वरमूल रोगादि निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुष्ठ कामलादिक दुखदायी, रोग जलोदर होवे भाई।
इन सबसे भी मुक्ती पाएँ, शांति नाथ को पूज रचाएँ।।18।।

ॐ ह्रीं कुष्ठ कामलादिक जलोदर भगंदरादिव्याधि नाशन समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र रोग से जो दुख पावें, औषधि कोई काम न आवें।
शांतिनाथ को पूजे सारे, संकट में प्रभु बने सहारे।।19।।

ॐ ह्रीं नाना विधनेत्र रोग विनाशन समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कैन्सरादि प्राणों के घाती, और कोई क्षय रोग की भांती।
इनसे प्राणी मुक्ती पावें, शांति प्रभु को पूज रचावें।।20।।

ॐ ह्रीं प्राणघाति कैंसर महाव्याधि विनाशन समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुरूपता से दुखपाते, चर्म रोग भी जिन्हे सताते।
जिन पूजा से मुक्ती पाते, सुन्दर रूप जीव प्रगटाते।।21।।

ॐ ह्रीं कुरूपादि कष्ट निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

वियोग स्वजन का जो हो जावे, मन में अतिशय दुःख सतावे।
शांतिनाथ की पूजा भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।22।।

ॐ ह्रीं प्राणघातक इष्ट वियोग दुखनाशन समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन व्यापार की चिन्ता पावे, जिसके कारण जी अकुलावे।
शांतिनाथ की पूजा भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्व मानसिकता विनाशन समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायूयान रेल में जावे, दुर्घटना भय जिन्हे सतावे।
शांतिनाथ की पूजा भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।24।।

ॐ ह्रीं सर्व वायुयान दुर्घटना कष्ट निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोटर कार में यात्री जावें, दुर्घटना का भय जो पावें।
शांतिनाथ की पूजा भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।25।।

ॐ ह्रीं सर्व चतुष्चक्रिका दुर्घटनादि संकट मोचन समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वय त्रय चक्री वाहन जानो, टक्कर का भय होवे मानो।
शांतिनाथ की पूजा भाई, भवि जीवों को सौख्य प्रदायी।।26।।

ॐ ह्रीं सर्व द्वय-त्रय चक्रिका दुर्घटनादि कष्ट निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

भूकम्प आदि की भारी, दुर्घटना हो दुखकारी।
प्रकृति प्रकोप ना आए, जो प्रभू को पूज रचाए।।27।।

ॐ ह्रीं भूकम्प दुर्घटना निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहर समुद्र सरिताएँ, इसमें प्राणी गिर जाएँ।
प्रभु नाम मंत्र जो ध्याते, उस संकट से बच जाते।।28।।

ॐ ह्रीं नदी समुद्रादि कष्ट निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्पादिक बिच्छु सताएँ, जब वैद्य भी काम ना आएँ।
तब शांति प्रभू की भक्ति, दुख से दिलवाए मुक्ती।।29।।

ॐ ह्रीं वृश्चिक सर्पादि विषधर विष निर्णाशन समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह व्याघ्र क्रूर अष्टापद, हिंसक प्राणी की आपद।
जो प्रभू को पूज रचाए, उसकी क्षण में नश जाए।।30।।

ॐ ह्रीं अष्टापदव्याघ्र सिंहादि क्रूर हिंसक जंतुभय निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो क्षरण विषाक्त गैसादी, जिससे हो आधि व्याधी।
नर पशु के संकट सारे, जिन भक्ती शीघ्र निवारे।।31।।

ॐ ह्रीं विषाक्तवाष्प क्षरणादि संकट निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बम अकस्मात फट जावे, या संकट कोई आवे।
जो जिन पद पूज रचाए, ना संकट उसे सताए।।।32।।

ॐ ह्रीं बम विस्फोटकादि आकस्मिक संकट निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

व्यन्तर पिशाच भूतादी, शाकिन डाकिन ग्रह आदी।
इन की बाधा हो भारी, अर्चा कर नसती सारी।।
हम शांतिनाथ को ध्यायें, आपद से मुक्ती पाएँ।
तुम हो प्रभु शांती कारी, सब बाधा हरो हमारी।।33।।

ॐ ह्रीं भूत पिशाच व्यंतरादि बाधा आदि सर्व संकट निवारण समर्थाय श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र ॐ श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्वकार्य सिद्धिं कुरू कुरू स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- शांती का दरिया बहे, नाथ! आपके द्वार।
हम भी अवगाहन करें, पाने शांति अपार।।

(ज्ञानोदय छन्द)

श्री शांतिनाथ की पूजा कर, जीवन में शांती प्रगटाएँ।
जयमाला की कल कल में हम, पल पल अवगाहन कर पाएँ।।
श्रद्धा का अर्घ्य बनाकर के, जयमाला हम गाने आये।
तीर्थेश अर्चना की गंगा से, रीता मन भरने आये।।1।।
नित रोग शोक की चिंताएँ, मानव के मन में रहती हैं।
दुष्चिन्ताओं की प्रखर धार, मानव की आयु हरती है।।
दिखला कर झूठे चमत्कार, मानव के मन को छलते हैं।
कई पाखण्डों के अण्ड पिण्ड में, प्राणी जग के जलते हैं।।2।।
जिन पूजा से भय अल्फ योग, इत्यादिक सब नश जाते हैं।
जो माथ लगाते गंधोदक, वे रोग से मुक्ति पाते हैं।।
कर मंत्र जाप शांतीधारा, अपना सौभाग्य जगाते हैं।
जिन शांति नाथ के चरणों में, प्राणी सब शांति पाते हैं।।3।।
हे नाथ! आप करुणा सागर, सब पर करुणा बरसाते हो।
जो सूर्य चांद ना कर पाए, वह ज्ञान प्रकाश दिलाते हो।।
तुमने शिव पथ को अपना कर, शुभ सिद्ध सदन को पाया है।
उस मोक्ष महल में जाने का, उर भाव उमढ़कर आया है।।4।।
हे नाथ! आपके भक्तों ने, भक्ती कर फल कई पाए हैं।
आरोग्य सम्पदा गृह शांती, जीवों ने भाग्य जगाए हैं।
हम आये आपके द्वारे पर, हे नाथ शीघ्र उद्धार करो।
प्रभु! विशद भाव से गुण गाते, संकट सारे प्रभु शीघ्र हरो।।5।।

दोहा- चरणों में प्रभु प्रार्थना, करते हम गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, दो हमको वरदान।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त! सकल विघ्न शान्तिकर! मंगल प्रद! मनोकामनापूर्ण! पंचम चक्रेश्वर द्वादश कामदेव! अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त! षोडशं तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते प्रभो, हो शांती चहुँ ओर।
शांतीमय जीवन बने, मन हो भाव विभोर।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा

परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार॥
नशियाँ जी में शोभते, जिनवर शांतीनाथ।
चालीसा गाते 'विशद', करते हम गुणगान॥

चौपाई

जम्बू द्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी॥
नगर हस्तिनागपुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांती जिन गाए॥
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो॥
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।
जन्म प्रभु जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया॥
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्त्र नेत्र से दर्शन पाया॥
पग में हिरण चिन्ह शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।
पञ्चम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवे गाए॥
तीर्थंकर सोहलवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए॥
सहस्त्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुख मिटाया॥
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया॥
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी॥
एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, तपकल्याणक प्रभु का मानो॥
आत्म ध्यान कीन्हें तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।

पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई॥
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए॥
छत्तीस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई॥
योग निरोध किये जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो॥
नौ सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया॥
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले॥
हरियाणा रेवाड़ी जानो, नशियाँ श्रेष्ठ यहाँ पर मानो।
शांतिनाथ की प्रतिमा प्यारी, पावन है जो अतिशयकारी॥
भाव सहित जो दर्शन पाते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
सुत के इन्छुक सुत उपजाते, निर्धन जीव सम्पदा पाते॥
रोगी अपने रोग नशाते, अज्ञानी सद्ज्ञान जगाते।
'विशद' भाव से महिमा गाएँ, हम भी मोक्ष महापद पाएँ॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुनें जो लोग।
सुख शांती सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग॥
शांतिनाथ के चरण को, ध्यायें जो गुणवान।
अल्प समय में ही 'विशद', पावें वह निर्वाण॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्तान्तर्ग श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा अलवर मासोत्तम मासे शुभे मासे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे एकम रविवासरे श्री मनोकामनापूर्ण शांतिनाथ विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

आरती श्री पद्मप्रभु जी की

हम तो आरती उतारें जी, पद्मप्रभ भगवन् की जय-जय
हम तो आरती..........
श्री धरणराज के लाल, सुसीमा उर आये
जन्मे कौशाम्बी नाथ, जगत् मंगल छाए
इनकी आरती उतारे जी, जय-जय पद्मप्रभ, जय-जय-जय। हम तो आरती..।।1।।
प्रभु भेष दिगम्बर धर, मुनि के व्रत धरे
किए कर्म घातिया नाश, सभी उनसे हारे
प्रभु पाये हैं, केवल ज्ञान, जगत में उपकारी
आओ भक्ति में डोल-डोल, हृदय के पट खोल-खोल-होऽऽ
इनकी महिमा है अपरम्पार, जगत मंगलकारी। हम तो आरती..।।2।।
नई जीवन में आये बहार, प्रभु गुणगाने से
कटे भव-भव के कर्म अपार, चरण में, आने से
'विशद' मिलती है खुशियाँ अपार, सुखी जीवन होवे
आओ मंदिर में दौड़-दौड़, हाथों को जोड़-जोड़-होऽऽ
प्रभु भक्तों के हैं करतार, प्रभु करुणाकारी। हम तो आरती..।।3।।

देहरा श्री चन्द्रप्रभु जी की आरती

(तर्ज-करहु आरती आज जिनेश्वर तुमरे द्वारे...)

करहुँ आरती आज, जिनेश्वर देहरे वाले।
देहरे वाले स्वामी देहरेवाले, चन्द्र प्रभु जिनराज॥
जिनेश्वर देहरे वाले॥टेक॥
तुम हो तीन काल के ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
तारण तरण जहाज-जिनेश्वर देहरे वाले॥1॥
मात सुलक्षणा के तुम प्यारे, महासेन के राज दुलारे।
चन्द्रपुरी जिनराज-जिनेश्वर देहरे वाले॥2॥
सावन सुदी दशमी शुभ गाई, प्रकट हुए चन्द्रप्रभु भाई।
आई सकल समाज-जिनेश्वर देहरे वाले॥3॥
अलवर जिले में नगर तिजारा, देहरे का है अजब नजारा।
भक्त बजावें साज-जिनेश्वर देहरे वाले॥4॥
दुखियाँ दर पे जो भी आते, उनके सब संकट कट जाते।
होवें पूरे काज-जिनेश्वर देहरे वाले॥5॥

दूर-दूर से यात्री आवें, 'विशद' भाव से दीप जलावें।
भक्त शरण में आज-जिनेश्वर देहरे वाले॥6॥
करहुँ आरती आज, जिनेश्वर देहरे वाले।
देहरे वाले स्वामी देहरे वाले, चन्द्र प्रभु जिनराज॥
जिनेश्वर देहरे वाले॥टेक॥

श्री शांतिनाथ की आरती

तर्ज वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्...

जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थंकर पदधारी गुणवान की॥टेक॥
वन्दे जिनवरम्...

नगर हस्तिनापुर में जन्में, मात पिता हर्षाए थे-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए थे-2
द्वार-द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की।
जगमग-जगमग....॥1॥

जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी-2
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी-2
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ आपके ध्यान की।
जगमग-जगमग....॥2॥

हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं-2
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं-2
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की।
जगमग-जगमग....॥3॥

हरियाणा के रेवाड़ी में, अतिशय बड़ा दिखाया है-2
श्वेत रंग की पावन प्रतिमा, चमत्कार फैलाया है-2
हर दुखियों का संकट हरती, महिमा अतिशयवान की।
जगमग-जगमग....॥4॥

शांति प्रदायक शांति प्रभु की, आरति करने आए हैं-2
चरण शरण के भक्त मनोहर, द्वीप जलाकर लाए हैं-2
'विशद' करें हम जय-जयकारे अतिशय क्षेत्र महान की।
जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की॥5॥
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनधरम्॥टेक॥

आचार्य श्री विशद सागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

गौरव गाथा जिनकी गाके, आह्लाद हृदय में आता है।
दर्शन करके श्री गुरुदेव का, माथ स्वयं झुक जाता है।।
जिन शासन के मार्ग प्रभावक, विशद सिन्धु है इनका नाम।
हृदय कमल में आह्वानन कर, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्रः! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आऐ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! संसारताप विध्वसनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! कामरोग विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।5।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निव.।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।6।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।7।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।8।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।9।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **शांती धारा जो करें, पावें शांती अपार।**
शिव पद के राही बनें, होवें भव से पार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा- **पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।**
कर्म अनादी से लगे, हो जावें निर्मूल।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- **जयमाला गुरु आपकी, शब्दों में ना आय।**
मोती सिन्धु के कभी, कोई क्या ? गिन पाय।।

(वीर छन्द)

क्षमामूर्ति हे गुरुवर तुमने, शिव पथ किया गमन है।
कर्म श्रृंखला को संयम से, तुमने किया समन है।।
पाकर के आदर्श आपके, यह जग हुआ चमन है।
ऐसे गुरुवर विशद सिन्धु पद, बारम्बार नमन है।।१।।
विशद सिन्धु जी इस जगती को, विशद बनाने वाले हैं।
वात्सल्य के रत्नाकर में, कमल खिलाने वाले हैं।।
वर्णन करना कठिन गुरु, शिवराह दिलाने वाले हैं।
मोह तिमिर से मोहित जग में, दीप जलाने वाले हैं।।२।।
विशद सिन्धु से झर-झर झरती, विशद गुणों की धारा है।
विशद सिन्धु ने संयम द्वारा, खोला शिव का द्वारा है।।
भक्तों ने यह जीवन अपना, किया समर्पित सारा है।
तुमरे गुण गाना हे गुरुवर! यह अधिकार हमारा है।।३।।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, पञ्चेन्द्रिय जयवान कहे।
षट् आवश्यक पालन करते, पञ्चाचारी आप रहे।।
दश धर्मों को धारण करते, द्वादश तप धारी ऋषिराज।
गुरु आपकी अर्चा करता, तीन योग से सकल समाज।।४।।

दोहा- **पूजा की है आपकी, भक्ति भाव के साथ।**
चरण शरण में आपके, झुका रहा मैं माथ।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।**
विशद भाव से आज हम, करते चरण प्रणाम।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत ।।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे॥
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ॥
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी॥
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्‌दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी॥
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि॥

ॐ शांति-शांति-शांति

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

मानस्तम्भ की आरती...

(तर्ज-इह विधि मंगल आरति...)

मानस्तंभ की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक॥
जिनवर चारों दिश में सोहें, भवि जीवों के मन को मोहे-मानस्तम्भ...
पूर्व दिशा में जिनवर गाए, वीतरागता जो दर्शाए-मानस्तम्भ...
दक्षिण दिश की प्रतिमा प्यारी, देखत लागे अतिमनहारी-मानस्तम्भ...
पश्चिम दिश के श्री जिन स्वामी, गाए पावन अन्तर्यामी-मानस्तम्भ...
उत्तर के जिन बिम्ब निराले, भव्यों का मन हरने वाले-मानस्तम्भ...
मानस्तंभ का दर्शन पाए, क्षण में मान गलित हो जाए-मानस्तम्भ...
'विशद' भावना हम ये भाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ-मानस्तम्भ...
दीप जलाकर के यह लाए, आरति के सौभाग्य जगाए-मानस्तम्भ...

श्री शांतिनाथ पूजन (नसियाँ जी रेवाड़ी)

स्थापना

हे शांति रूप करुणा निधान! हे ज्ञान दिवाकर तीर्थंकर।
हे धर्म प्रवर्तक वीतराग! हे कृपा सिन्धु जिन शिव शंकर॥
हे नशिया के श्री शांतिनाथ, हे अक्षय निधि गुण के ललाम।
आह्वानन करते निज उर में, चरणों में कर शत्-शत् प्रणाम॥

दोहा- शांतिनाथ भगवान हैं, शांती के दातार।
विशद शांति पाने प्रभू, आए आपके द्वार॥

ॐ ह्रीं आर्त्त रौद्र ध्यान निवारक परम शांती प्रदायक अतिशयकारी रेवाड़ी नशियाँ स्थिति श्री शांतीनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तोटक छन्द) तर्ज वन्दे जिनवरम्

जन्मादिक रोगों के क्षय को, निर्मल स्वभाव जल लाए हैं।
जो निज स्वरूप का ध्यान किए, वे शाश्वत सुख उपजाए हैं॥
हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप ज्वर क्षय करने, चन्दन सुरभित ये लाए हैं।
शुभ अशुभ भाव से रहित नाथ!, निज गुण प्रगटाने आए हैं॥
हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सिन्धू से अब पार हेतु, अक्षत ये श्रेष्ठ सजाए हैं।
अक्षय पद प्राप्त करे पावन, निज पद पाने को आए हैं॥

हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित स्वभाव शुचि पुष्पों की, निर्मल सुगन्ध महकाई है।
कामाग्नि बुझाने हेतु नाथ, अब शरण आपकी पाई है॥
हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण के रसमय चरू लेकर, हम द्वार आपके आए हैं।
नैवेद्य रहे इस जग में जो, हे नाथ! नहीं वह भाए हैं॥
हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व मोह तम हरने को, यह ज्ञान ज्योति प्रजलाई है।
केवल्य ज्ञान की ज्योति जगे, जो प्राप्त नहीं हो पाई है॥
हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज का स्वरूप प्रगटाने को, यह पावन धूप जलाते हैं।
अब कर्म नाश हो जाएँ सब, बश यही भावना भाते हैं॥
हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पुण्य पाप का क्षय करके, मुक्ती फल पाने आए हैं।
अब सिद्ध शिला पर वास करें, हमने ये भाव बनाए हैं॥
हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य की अर्घ्यावलि, हे नाथ! चढ़ाने लाए हैं।
अब पद अनर्घ पाएँ शाश्वत, यह विशद भावना भाए हैं॥
हम रेवाड़ी की नशियाँ में, श्री शांतिनाथ को ध्याते हैं।
चरणों में भक्ती भाव सहित, नत सादर शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांती दायक मोक्ष प्रदायक रेवाड़ी नशियाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''पंचकल्याणक के अर्घ्य''

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए॥1॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए॥4॥

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **महिमा गाने आपकी, हुए आज वाचाल।**
शांतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल॥

(छन्द अष्टक)

श्री शांतिनाथ की पूजा से, जीवों को शांती मिलती है।
जो श्रद्धा भक्ती हृदय धरे, तो ज्ञान रोशनी खिलती है॥
प्रभु पूर्व भव में भी तुमने, सद् संयम को अपनाया था।
सर्वार्थ सिद्धि के सुख भोगे, ये पुण्य का ही फल पाया था॥1॥
तैंतिस सागर की आयुपूर्ण, करके तुमने अवतार लिया।
श्री हस्तिनागपुर में माता, ऐरादेवी को धन्य किया॥
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदश अनुपम, बालक ने भूपर जन्म लिया।
तब इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रों ने, उत्सव आकर के महत् किया॥2॥
सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
फिर शची ने चंदन चर्चित कर, बालक के तन को पोंछ दिया॥
दाये पग में लख हिरण चिन्ह, सौधर्म इन्द्र ने उच्चारा।
यह शांतिनाथ हैं तीर्थंकर, बोलो सब मिलकर जयकारा॥3॥
अनुक्रम से वृद्धी को पाकर, फिर युवा अवस्था को पाया।
लखकर स्वरूप प्रभु के तन का, तब कामदेव भी शर्माया॥
फिर शांतिराज भी हुए विशद, श्री कामदेव पद के धारी।
बन गये चक्रवर्ती जिनवर, शुभ चक्र रत्न के अधिकारी॥4॥
छह खण्ड राज्य का भोग किया, पर योग मयी न हो पाए।
भोगों से भोगे गये स्वयं, पर भोग पूर्ण न हो पाए॥
यह सोच हृदय में आने से, वैराग्य भाव मन में आया।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, को संयम प्रभु ने अपनाया॥5॥
फिर ध्यान अग्नि से कर्म चार, प्रभु कर्म घातियाँ नाश किए।
फिर पौष शुक्ल की दशमी को, शुभ केवल ज्ञान प्रकाश किए॥

श्री शांतिनाथ तीर्थंकर जिन, सोलहवे जग में कहलाए।
प्रभु समवशरण उपदेश दिए, तब सुनने भव्य जीव आए।।6।।
वह श्रद्धा ज्ञानावरण प्राप्त, कर मोक्ष मार्ग को अपनाए।
पूजा भक्ती कर भाव सहित, श्री जिनवर की महिमा गाए।।
फिर ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश को, प्रभु कर्म अघाती नाश किए।
श्री विश्व हितंकर शांतिनाथ, जिन मोक्ष महल में वास किए।।7।।
प्रभु की महिमा जग में अनुपम, जिसका कोई ओर न छोर कहीं।
शांति का दाता अवनी पर, हे नाथ! आप सम कोई नहीं।।
भक्ति से मुक्ती मिलती है, यह आज समझ में आया है।
जीवन का पाया राज अहा, जब से तव दर्शन पाया है।।8।।
हरियाणा के रेवाड़ी में, नशिया अतिशय मनहारी है।
श्री शांतिनाथ की धवल मूर्ति, शुभ पावन अतिशयकारी है।।
गाड़ी में लेकर मूर्ती को, इक मूर्तिकार जब आया था।
श्री शांतिनाथ की प्रतिमा ने, तब चमत्कार दिखलाया था।।9।।
अनायास गाड़ी आकर के, कीलित सी हो जाती है।
कई कोशिशे करने पर भी, आगे ना बढ़ पाती है।।
भट्टारक जी को पता चला, तो उस स्थान पर आते हैं।
मंदिर का निर्माण कराकर, पञ्चकल्याण कराते हैं।।10।।
श्री शांतिनाथ की पूजा कर, कई लोगों ने फल पाया है।
दुखियों के दुख नश गये पूर्ण, उनने सौभाग्य जगाया है।।
हम पूजा करने हेतु विशद, यह द्रव्य मनोहर लाए हैं।
दो मुक्ती हमे भव सागर से, यह फल पाने को आए हैं।।11।।

दोहा- कामदेव चक्रेश अरू, जिन तीर्थेश महान।
तीन-तीन पद धार कर, शिवपुर किया प्रयाण।।

ॐ ह्रीं रेवाड़ी नशियाँ जी स्थित सर्व संकट हारी परम शांतिदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शान्ती जिन के नाम का, करो विशद तुम जाप।
चरण कमल की भक्ति से, कट जायेंगे पाप।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)